बरसात की एक रात पूनम के साथ-2

“तभी बारिश आ गई। हम दोनों नीचे आते आते पूरे ही भीग गये। फिर वो थोड़ी रोमांटिक होने लगी। हमें एक-दूसरे का स्पर्श अच्छा लगने लगा, मैं बोला- चलो मैं तुम्हें होस्टल छोड़ देता हूँ। “ठीक है !” वो बोली। हमने रिक्शा लिया और चल दिये। रास्ते भर हम एक-दूसरे का हाथ मसल रहे थे। […] ...”

Story By: (nomansland69)
Posted: Friday, February 22nd, 2013
Categories: चुदाई की कहानी
Online version: बरसात की एक रात पूनम के साथ-2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

बरसात की एक रात पूनम के साथ-2

तभी बारिश आ गई। हम दोनों नीचे आते आते पूरे ही भीग गये। फिर वो थोड़ी रोमांटिक होने लगी। हमें एक-दूसरे का स्पर्श अच्छा लगने लगा, मैं बोला- चलो मैं तुम्हें होस्टल छोड़ देता हूँ।

“ठीक है !” वो बोली।

हमने रिक्शा लिया और चल दिये।

रास्ते भर हम एक-दूसरे का हाथ मसल रहे थे। उसके हॉस्टल पहुँचने के बाद बारिश और तेज होने लगी तो पूनम ने बोला कि बारिश कम हो जाये तो चले जाना।

मैं तो यही चाहता था कि मैं अभी पूनम को छोड़ कर नहीं जाऊँ तो मैं उसके साथ उसके कमरे में चला गया।

बहुत अच्छे तरीके से कमरे को सजाया था उसने। मैंने देख रहा था तभी वो तौलिया लेकर आई और बोली- सर पोंछ लो।

मैंने उसी से बोल दिया- तुम ही पोंछ दो।

वो हँसी और मेरा सिर तौलिये से पोंछने लगी। फ़िर वो सामने आकर अपने बालों को तौलिये से पोंछने लगी। उस समय वो और भी खूबसूरत लगने लगी। हमारे कपड़े अभी भी भीगे हुये थे। अभी मैंने पूनम को पूरा निहारना शुरू किया तो वो शरमा गई। मैं उठा, पूनम के पास आया, उसे उठाया और मैंने अपने गले से लगा लिया और अपने में भींच लिया।

एक बारगी तो वो हल्के से बोली- मनोज !

मैंने उसे अनसुना कर दिया और उसे और कस कर भींच लिया। अब उसने भी अपनी हाथों को मेरे पीठ पर ना शुरू कर दी। मेरा लण्ड जो 7 इंच लम्बा और 2 इंच मोटा है, सलामी देने लग़ा और उसकी चूत के पास सट रहा था। मुझसे बरदाश्त नहीं हुआ तो मैंने अपना लण्ड उसकी चूत पर दबा दिया। वो थोड़ी सहमी लेकिन उसने भी इसमें मेरी मदद की।

अब मैंने उसका चेहरा उठाया और उसके होंठों को चूमने और चूसने लगा। वो भी मेरा साथ देने लगी। हमने लगभग आधे घंटे तक एक-दूसरे को चूमा, फ़िर मैंने उसका एक हाथ उठा कर अपने लण्ड पर रख दिया। उसने अपना हाथ हटा लिया।

मैंने उसका हाथ दुबारा अपने खड़े हुए लण्ड पर रखा। इस बार उसने मेरा लण्ड धीरे-धीरे सहलाना शुरू किया। मैं उत्तेजित होने लगा। यह मेरा पहली बार था जब किसी लड़की का हाथ मेरे लण्ड को छू रहा था। मैं उसे पागलों की तरह चूमे जा रहा था।

फ़िर मेरे हाथों ने हरकत करनी शुरू की, मेरे हाथ उसकी चूचियों को सहलाने लगे। उसके उरोज कड़े हो गये थे। जब मैंने उसके चुचे दबाये तो उसके मुँह से सीऽऽऽऽऽ की हल्की-सी सिसकारी निकल गई।

मैंने उसे अलग किया, उसकी आँखों में देखा। हम दोनों के चेहरे पर कोई भी भाव नहीं था। मैंने उसके कुरते को निकाल कर अलग किया। उसने कोई भी विरोध नहीं किया। वो मेरे सामने केवल उजली ब्रा और काली पजामी में थी, कयामत लग रही थी।

मैं उसे देखने लगा, वो शरमा गई, बोली- ऐसे मत देखो, मुझे शर्म आ रही है।

कह कर अपने हाथों से अपने वक्ष को ढकने लगी। मैंने उसके हाथों को हटा कर उसे अपनी तरफ़ खींच लिया, अपने सीने से लगा लिया।उसने मेरा शर्ट उतार दिया। मैंने उसकी ब्रा भी

उतार दी। हमने एक-दूसरे को गले लगा लिया। पहली बार किसी लड़की का स्पर्श हुआ था। पूरे शरीर में तरंगें उठने लगी। उसके कड़े चुचे मेरे सीने में गड़ने लगे लेकिन अच्छा भी लग रहा था।

मैंने पूनम से बोला- पूनम, यह मेरा पहली बार है।

वो बोली- मेरा भी।

मैंने पूछा- कोई आएगा तो नहीं ना ?

वो बोली- नहीं, कोई नहीं है, अगले 4 दिनों तक तुम चाहो तो 4 दिन आराम से मेरे साथ रह सकते हो।

मैंने कहा- नेकी और पूछ पूछ !

और हम हँसने लगे।

हमने फ़िर चूमाचाटी करना शुरू किया। अब मैंने अपना हाथ पजामी के ऊपर से उसकी चूत पर रखा तो वो चिहुँक गई। वह भी अपना हाथ मेरे लण्ड पर रखकर सहलाने लगी। हम दोनों गर्म होने लगे। अब हम जंगलियों की तरह चुम्बन करने लगे, एक-दूसरे को खा जाना चाहते थे हम।

उसने मेरे जीन्स के बटन खोल के अपना हाथ अन्दर डाल कर मेरे लण्ड को पकड़ लिया और उसे आगे-पीछे करने लगी। मैंने भी उसकी पजामी के अन्दर हाथ डाल कर उसकी चूत पर हाथ रख दिया। वो फ़िर चिहुंक गई। वो पूरी तरह से गीली हो गई थी। वो मेरा लण्ड और मैं उसकी चूत को सहला रहा था। फ़िर हमने अपने बाकी बचें हुए कपड़े भी उतार दिये।

हम बिल्कुल नंगे थे एक-दूसरे के सामने।

मैंने उसे लिटा दिया और मैं उसके ऊपर लेट गया, हमारी साँसें टकरा रही थी, हम पूरी मस्ती में थे। मैं उसकी सुराहीदार गर्दन को चूमने लगा। वो और मस्त हो गई और उसकी सिसकारी और तेज़ हो गई- आऽऽऽ अऽऽऽ मनोज़ऽऽऽऽऽ अऽ !

मैं अब उसकी चूचियों से चूस कर खेल रहा था। वो भी पूरे मस्ती में थी और सेक्सी आवाज़ें निकालने लगी- ओह्ऽऽऽऽऽ आऽऽऽऽऽ मनोज़, मनोज़ !करने लगी।

मैं और नीचे जाते हुए अब उसके चूत के पास मेरा मुँह था। मैंने नंगी फ़िल्मों में देखा था सो मैं वही करने जा रहा था। तो उसने रोक दिया- छीः !नहीं मनोज़।

मैंने बोला- अरे कुछ नहीं होगा। तुम्हें अच्छा लगेगा।

कहकर मैंने उसकी चूत पर अपनी जीभ लगा दी। उसके मुँह से सिसकारियाँ निकलने लगी।

“आह्हह्हह्हह्हह्हऽऽऽऽऽ मनोज़, आह्हह्ह.....नहीईईईई, मनोज़ अब बर्दाश्त नहीं हो रहा है, कुछ करो प्लीज।”

कहकर मेरा चेहरा अपने चूत पर दबाने लगी। उसके चूत से नमकीन पानी आने लगा।

मैं उठा और अपना लण्ड उसके होठों में लगा दिया तो वो बोली- नहीं, मैं नहीं करूँगी।

मैंने बोला- कम ऑन पूनम, तुम्हें अच्छा लगेगा। मुझे तुम्हारा अच्छा लगा था।

थोड़ा ना-नुकुर के बाद वो मान गई। उसने मुँह में मेरा लण्ड लिया। बहुत अजीब लेकिन सुखद एहसास था। उसके मुँह की गर्मी मेरे लण्ड को बहुत अच्छी लग रही थी। लेकिन उसने तुरंत ही निकाल लिया, पहली बार था शायद इसिलिए उसे अच्छा नहीं लग रहा

था।

अब वो बोली- अब कुछ करो मनोज़ जल्दी। यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं।

मैंने पूछा- तुम्हें मेरा लण्ड चूसना अच्छा नहीं लगा क्या ?”

वो थोड़ी शरमा कर बोली- अच्छा लगा मुझे, लेकिन अब बाद में।

मैंने बोला- ठीक है।

अब मैं उसके ऊपर था और अपने लण्ड को उसके चूत पर रख कर बोला- पूनम, थोड़ा दर्द होगा, सह लोगी ना ?

उसने हल्के से ‘हाँ’ में सिर हिला दिया। मैंने अपना लण्ड उसके चूत पर लगा कर एक हल्का सा धक्का दिया तो मेरा सुपारा अन्दर चला गया !

“आहहहहहहहह” उसके मुँह से हल्की सी चीख निकली।

मैंने एक और धक्का दिया, मेरा 3 इंच लण्ड उसके चूत में चला गया, इस बार वो थोड़ा तेज़ चीखी और बोली- मनोज़, बाहर निकाल लो, बहुत दर्द हो रहा है।

मैंने बोला- तुमने ही बोला था ना कि तुम दर्द सह लोगी।

इतना बोल मैंने एक और धक्का दिया।

“आअआ आआआ आआआआ सऽऽअऽऽऽऽऽऽ”

उसकी झिल्ली के पास आकर मेरा लण्ड अटक गया, मैं समझ नहीं पा रहा था कि मेरा

लण्ड अन्दर जा क्यों नहीं रहा है। पूनम दर्द में थी, मैंने पूनम से पूछा- मेरा अन्दर क्यों नहीं जा रहा है पूनम ?

वो बोली- हमारे अन्दर झिल्ली होती है, तुम्हारा वहीं पर अटका हुआ है, मुझे बहुत दर्द हो रहा है, निकाल लो ना मनोज़ प्लीज।

मैं बोला- पूनम आज मत रोको प्लीज।

कह कर मैंने एक और ज़ोरदार धक्का दिया, इस बार उसकी फ़ाड़ते हुये मेरा लण्ड पूरा घुस गया। इस बार उसकी काफ़ी तेज़ चीख़ निकल गई, उसकी आँखों में आँसू आ गये और मैं डर गया था कि चीख सुन कर कोई आ ना जाये।

मैं धक्के मारना बंद कर उसके होंठों को चूमने लगा। जब वो थोड़ी शांत हुई तो वो खुद ही अपने कमर उठा कर मेरा लण्ड अन्दर लेने लगी।

“ठीक हो ?” मैंने पूछा।

“चुद रही हूँ तो मैं ठीक कैसे हो सकती हूँ ?” कह कर मुस्कुराई।

उसे ऐसा कहते सुन मुझमें पता नहीं कहाँ से जोश आ गया, मैं तेज़ तेज़ धक्के मारने लगा, हमारी मस्ताई आवाज़ें पूरे कमरे में गूंज रही थी।

“आआआआहहहह, ओहह, मनोज़ऽऽऽ आआआहहहह मर गई मैं, धीरे आआहहहह !”

10 मिनट की चुदाई के बाद उसका शरीर अकड़ने लगा, वो बोली- तेज़ और तेज़ आआआहह ह आआहहह हहह” कह कर मुझे कस कर पकड़ लिया।

मैं रुक गया, कुछ देर बाद उसने अपना शरीर ढीला छोड़ दिया, मैंने पूछा- क्या हुआ ?

तो वो शरमाते हुये बोली- मेरा हो गया।

मैंने बोला- मेरा तो बाकी है…

बोल कर मैं तेज़ तेज़ धक्के मारने लगा। फ़िर से पूरे कमरे में आहें गूंजने लगी।

20-30 तेज़ धक्के मारने के बाद मेरा निकलने वाला था, मैंने पूनम को बोला- पूनम, मैं झड़ने वाला हूँ।

वो तपाक से बोली- अन्दर नहीं गिराना।

तो मैंने अपना लण्ड बाहर निकाल कर उसकी चूत पर मुठ मारने लगा तो उसने मेरा लण्ड अपने हाथों में लिया मेरा मुठ मरवाने लगी। मैं उसे चूम रहा था और उसके हाथ मेरा काम कर रहे थे।

“तेज़ पूनम तेज़ ! मेरा निकलने वाला है।”

वो तेज़ तेज़ हिलाने लगी।

“आआहहहह्हह पूनमऽऽऽऽ !” बोल कर मैं उसके हाथों में झड़ गया। मैं उसके ऊपर ही लेट गया और चूमने लगा। वो मुझे कस कर पकड़े हुये थी। हम दोनों आनन्द में सराबोर थे। उठ कर देखा तो पूरे बिस्तर पर खून फ़ैला थ।

हम फ़िर लेट गये। मैं फ़िर उठा और उसके चेहरे के पास अपना चेहरा ले जाकर पूछा- तुम रो क्यों रही थी ?

तो वो हँसते हुये मुझे गले लगाते हुये और चूमते हुए बोली- अरे बुद्धू, दर्द से मेरे आँखों में आँसू आ गये थे।

मैंने पूछा- पूनम, तुम्हें बुरा तो नहीं लगा ना ?

तो वो मेरे होंठों को चूमते हुये बोली- नहीं।

और इस तरह से हमने पहली बार सेक्स किया। उस दिन हमने पूरी रात सेक्स का मज़ा लिया। हमने 4 बार और सेक्स किया उस दिन।

अगले 4 दिनों तक हम बिल्कुल पति-पत्नी की तरह रहे और प्यार करते रहे।

4 दिनों के बाद हम अपने काम में लग गये। हम रोज़ मिलते थे।

एक दिन अचानक वो मुझे बिना बताये अपने घर चली गई हमेशा के लिये।

मेरा भी नामांकन पुणे के इंजिनियरिग कॉलेज में हो गया। मैं उसे हमेशा याद करता था। मेरे पास अभी भी मोबाईल नहीं था और घर से उतने पैसे नहीं मिलते थे कि मैं हमेशा उससे बात कर पाता।

एक दिन फ़ोन किया तो पता चला कि उसकी मौत हो गई। उसको ब्लड कैंसर था और उसने मुझे नहीं बताया था कि मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा, क्योंकि मैं उसे बहुत प्यार करने लगा था। मैं फोन पकड़े वैसा-का वैसा ही खड़ा रहा।

मुझे बतायें कि आपको मेरी कहानी कैसी लगी।

Other stories you may be interested in

टीचर की यौन वासना की तृप्ति-13

अब तक इस सेक्स कहानी में आपने पढ़ा कि नम्रता और मैं, हम दोनों अपने अपने पार्टनर के साथ रात को चुदाई कर चुके थे. नम्रता मुझे अपने पति के संग हुई चुदाई के बारे में सुनाने में लगी थी. […]
Full Story >>>

ममेरे भाई ने मेरी कुंवारी चूत की चुदाई की-2

मेरी चूत चुदाई की कहानी के पहले भाग ममेरे भाई के साथ मेरी कुंवारी चूत की चुदाई-1 में अब तक आपने पढ़ा कि मेरे ममेरे भाई अर्पित ने मेरे मामा मामी की गैरमौजूदगी में मुझे सेक्स के लिए पटा लिया […]
Full Story >>>

पाठिका संग मिलन-3

ट्रेन का कन्फर्म टिकट नहीं मिला। मैंने फ्लाइट बुक कर ली। विमान पूना में हवा में उतर रहा था। इसी शहर में … किसी लड़की से मिलने जाओ तो वह शहर भी कुछ स्पेशल-सा लगता है। रेलगाड़ी से धीरे धीरे […]
Full Story >>>

एक और अहिल्या-7

“मेरी मंज़िल तो मेरे पास है लेकिन मेरी किस्मत में नहीं.” “क्या मतलब ?” मैं चौंका. मैं वसुन्धरा की बात का मर्म समझ तो गया था लेकिन थोड़ा कंफ्यूज़ था. कुछ था जो मेरी जानकारी से बाहर था. डगशाई पहुँच कर […]
Full Story >>>

खामोशी : द साईलेन्ट लव-8

अब तक कहानी में आपने पढ़ा कि दोबारा रायपुर पहुंचने के बाद जब मैंने कॉन्डोम लगाकर मोनी की चूत मारी तो उस रात वह भी मेरे साथ स्खलित हो गई थी. अगले दिन मैं उम्मीद कर रहा था कि वह […]
Full Story >>>